चित्तौड़गढ़ के बेगूं क्षेत्र में स्थित आस्था के प्रमुख केंद्र बानोडा बालाजी मंदिर में
माननीय अध्यक्ष का संबोधन

आज हम सब श्रद्धालुओं और भक्तजनों का सौभाग्य है कि हमें अपने आस्था के केन्द्र इस पवित्र स्थान बानोड़ा बालाजी के स्थान पर आना हुआ, जो अद्भुत है, जिसकी महिमा केवल चित्तौड़गढ़ बेगूं, राजस्थान में ही नहीं है। यह ऐसा स्थान है, जिसकी अद्भुत लीला है। कई दिनों से सभी का आग्रह था कि मैं यहां पर श्री राम कृष्ण कल्कि शक्ति महायज्ञ आहूति में आऊं, लेकिन कई प्रयासों के बाद भी कार्यक्रम नहीं बन पा रहा था।

जब मैं बूंदी के लिए चला तो कहीं न कहीं मेरे मन में था कि मुझे बालाजी बुला रहे हैं। जब बालाजी बुला रहे हैं तो रुकते नहीं है। रात को एक बजे संजय जी आए, लेकिन मैंने कई बार मना किया, लेकिन वह रात को एक बजे तक खड़े रहे। यह मैंने नहीं कहा है, लेकिन यह कृपा बालाजी की है। जब बालाजी ने बुलाया है तो बालाजी के दर्शन करने जाना ही है। यह भी कृपा बालाजी की ही होती है। यहां पर जो लाखों श्रद्धालु और भक्तजन आए हैं, उन पर भगवान की कृपा है, बालाजी की कृपा है, इसीलिए यहां पर आए हैं, अन्यथा लाखों लोग अपने घरों में बैठे हैं। यह बालाजी की कृपा आप और हम पर है कि हमें बालाजी ने दर्शन दिए हैं। यहां के मंच पंडित कैलाश जी हैं। यह मंदिर बहुत छोटा था, लेकिन भक्त की आस्था और बालाजी की कृपा है कि मैं जब भी यहां पर आता हूं, मुझे भगवान के नए मंदिर का दर्शन करने का मौका मिलता है। यह अपने आप में अद्भुत है। आप भी हर साल आते होंगे और आप भी देख रहे होंगे कि हर साल आपको नए मंदिर का निर्माण यहां मिलता है। कैलाश पंडित जी किसी से नहीं कहते हैं, लेकिन भक्तजन अपने आप आते हैं और मंदिर का निर्माण करते हैं। यह एक भक्त की आस्था और बालाजी की कृपा का ही प्रताप है, इसलिए स्थान का अपने आप में बड़ा महत्व होता है। हमारे धर्म और संस्कृति के अंदर स्थान, उसके बाद वास्तु से निर्माण का एक अद्भुत रूप होता है।

जब निर्माण कार्य चलता है तो प्रभु की कृपा से वह निर्माण कार्य रुकता नहीं है। मैं इस बालाजी के मंदिर में यह भी अनवरत देख रहा हूँ कि इसके निर्माण की जब से शुरूआत हुई है, वह रुकी नहीं है। यह भी बालाजी की कृपा है। आज यह 1206 श्रीराम-कृष्ण कल्पित महायज्ञ अद्भुत है। आप यहां की कृपा देखिए कि 365 दिन अनवरत लगातार यहां पर यज्ञ चलता है। अनवरत रामायण चलती है। कभी यज्ञ में न विराम हुआ न ही व्यवधान हुआ। यह भी प्रभु की कृपा है। हमारी भारतीय संस्कृति में यज्ञ का बहुत बड़ा महत्व है। हम जब यज्ञ करते हैं तो सृष्टि के कल्याण के लिए यज्ञ करते हैं। विश्व के कल्याण के लिए यज्ञ करते हैं। इसलिए भारत की धरती वसुधैव कुटुम्बकम् की धरती है। हम सारे विश्व को परिवार मानते हैं। अगर सारे विश्व के कल्याण की बात कोई करता है तो भारत की धरती करती है, यहां की संस्कृति करती है, यहां की आध्यात्मिक शक्ति करती है। यही कारण है कि दुनिया के अन्दर भारत की आध्यात्मिक शक्ति और संस्कृति आप जैसे संस्कृति दूतों के कारण दुनिया के अलग-अलग देशों में फैल रही है। हमारी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया गया। हमारी आस्था और धर्म को नष्ट करने का प्रयास किया गया, लेकिन यही मेवाड़ की धरती, जो कि महाराणा प्रताप की धरती है, जिन्होंने धर्म और संस्कृति के लिए जंगल में जाकर भूखे रहकर भारत की संस्कृति और धर्म को बचाने का काम किया था। यह त्याग और बलिदान की

धरती है। यहां पन्नाधाय ने अपने पुत्र का बलिदान करके उस समय के शासक को बचाने का काम किया था। यह भारत की धरती ही हो सकती है। यह मीरा की धरती है। यहां उन्होंने राज-पाठ छोड़कर प्रभु की भक्ति में सबकुछ समर्पण कर दिया। शौर्य, त्याग और समर्पण की यह धरती है। भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के इतिहास में जब हम पढ़ते हैं कि किस तरीके से अपने धर्म और संस्कृति के लिए घास की रोटी खाकर देश और धर्म को बचाने का काम किया गया तो वह भारत की संस्कृति और भारत के लोग ही कर सकते हैं।

इसीलिए हमें हमारी विरासत पर गर्व है। हमें हमारी संस्कृति पर गर्व है। हमारे अध्यात्म पर गर्व है। इस यज्ञ के संस्कार अभी से नहीं, बल्कि जब आप भारतीय संस्कृति को पढ़ेंगे तो आप पाएंगें कि यज्ञ हमारी सबसे पुरानी संस्कृति रही है। यज्ञ सर्वकल्याण के लिए है। सबके कल्याण के लिए और सबकी समृद्धि के लिए है। इसीलिए एक समय आया था जब राक्षसों ने यज्ञ के अन्दर व्यवधान करने का प्रयास किया था। भगवान राम ने अवतार लिया और राक्षसवृत्ति का नाश किया। इसीलिए यज्ञ हमारी संस्कृति है। यज्ञ हमारा अध्यात्म है। यज्ञ हमारा धर्म है। यज्ञ से सबका कल्याण होता है। यज्ञ से सबके जीवन में समृद्धि आती है। वायुमण्डल में शुद्धता होती है और सबके जीवन में खुशहाली यज्ञ ही लेकर आता है। मैं इस यज्ञ के आयोजन पर, जितने लोगों ने यज्ञ में आहुति दी, उन सब महानुभावों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। मैं पुन: महंत कैलाश जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ कि आपके कारण हम सबको बालाजी और कल्ला जी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। भैरूजी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। लक्ष्मी माँ के दर्शन करने का सौभाग्य मिला तथा कितने ही मंदिरों के दर्शन करने का एक ही स्थान पर अगर किसी ने सौभाग्य दिया है तो पंडित कैलाश जी ने दिया है। उनको भी हम इस मौके पर बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं, उनका स्वागत करते हैं। इसी तरीके से हमारे भगवान के भक्त सेवा करते रहे और सबके कल्याण और समृद्धि की कामना करते रहे। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।